ISSN-0973-3833

A JOURNAL OF ASIA FOR DEMOCRACY AND DEVELOPMENT-VOL-VII,2007

बोस फासिस्टवादी नहीं थे

डॉ. नगमा खानम*

स्वतंत्रता आन्दोलन के क्रान्तिकारियों में सुभाष चन्द्र बोस का नाम अग्रगण्य है। वह न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान वीर थे बल्कि उन्होंने भारत को दासता की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया था। बोस एक क्रान्तिकारी थे जो शनैः शनैः चलने वाले राजनीतिक आन्दोलन में विश्वास नहीं करते थे अपितु वह अंग्रेजों को जल्द से जल्द भारत से खदेड़ना चाहते थे। सम्भवतः इसी कारण उनके आलोचक उन्हें नाजी तथा फासिस्ट समर्थक मानते थे। वास्तव में वह भारत की स्वतंत्रता के लिए फासिस्ट शक्तियों का समर्थन लेने को भी उचित मानते थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय राजनीतिक आवश्यकताओं को महसूस करते हुए उन्होंने धुरी राष्ट्रों से सहयोग को भारत के हित में माना था।

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि बोस के मन मे फासीवादी अधिनायकों के सवल तरीकों के प्रति भावनात्मक झुकाव था। 1934–35 में बोस ने अपनी पुस्तक 'Indian Struggle' में लिखा था कि मुसोलिनी एक ऐसा व्यक्ति है जिसका आधुनिक यूरोप की राजनीति मे विशेष महत्व है।(1) मुसोलिनी के प्रति सुभाश के सद्भावको प्रजातन्त्र विरोधी और स्वतंत्रता विरोधी अनुभव किया जाने लगा जबकि बोस का मत था कि भारत में साम्यवाद पनप नहीं सकता, क्योंकि साम्यवाद राष्ट्रवाद को स्वीकार नहीं करता। गांधीवाद को वह एक नये रास्ते के रूप में मानते थे। उनके अनुसार गांधीवाद के पास समाज निम्रण की कोई वास्तविक योजना नहीं थी। इन सभी मान्यताओं के कारण उन पर यह आरोप लगाया जाता रहा हे कि वह फासिस्ट हैं।

सुभाष बोस के मन में भारत को ब्रिटिश साम्राज्यवाद की लौह श्रृंखलाओं से मुक्त करने की जो तीव्र छटपटाहट थी उसी ने कम से कुछ अंशों मे फासीवादी विचारों का समर्थक बना दिया था। बोस ने भारत के लिए ब्रिटिश साम्राज्यवाद की समाप्ति के बाद एक तानाशाही व्यवस्था की मांग की थी, एक कमालपाशा की मांग की थी। 1941 में काबुल में बोस ने कहा था– जब तब देश में एक तीसरा पक्ष अर्थात् अंग्रेज है तब तक इस फूट का अन्त नहीं हो सकता। वह बढ़ती ही जाएगी उसका अन्त तभी होगा जब भारत पर बीस वर्ष के लिए कोई अधिनायक शासन करेगा। ब्रिटिश शासन के समाप्त होने पर कम से कम कुछ वर्ष के लिए भारत में अधिनायक शासन करेगा। देश मे अन्य कोई संविधान सफल नहीं हो सकता क्योंकि भारत किसी एक रोग शिकार नहीं है। वह इतनी राजनीतिक बीमारियों का शिकार है कि केवल एक निर्मम अधिनायक ही उसे स्वस्थ्य कर सकता है। भारत को एक कमाल पाशा की आवश्यकता है।(2)

भारत के सुखमय भविष्य के लिए बोस ने अच्छी व्यवस्था देने की जो कामना की थी, आज की

---

* अंशकालिक प्रवक्ता उरई (जालोन) उ.प्र., पीएच.डी.शोध पर आधारित, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झाँसी 2005,
निदेशक डॉ.जयश्री, उरई (जालोन)